खुला हुआ स्वर्ग

खुला हुआ स्वर्ग

"...और स्वर्ग खुल गया... यहेजकेल 1:1"

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलोर**
प्रथम संस्करण अक्तूबर 2011

अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Open Heavens)

खुला हुआ स्वर्ग

खुला हुआ स्वर्ग

"...और स्वर्ग खुल गया... यहेजकेल 1:1"

विषयसूचि

परिचय		1
1.	जैसे स्वर्ग में वैसे ही पृथ्वी पर	3
2.	खुला हुआ स्वर्ग क्या है?	6
3.	किस प्रकार स्वर्ग खुलता है?	13
4.	क्या आपके क्षेत्र में स्वर्ग खुला है	20

परिचय

मसीह की देह लोगों, समुदायों और भौगोलिक क्षेत्रों में खुले हुए स्वर्ग के बारे में ताजी समझ और प्रकाशन प्राप्त कर रही है।

ऐसा प्रतीत होता है कि संसार में कुछ स्थान ऐसे हैं जो खुले हुए स्वर्गों के लिए "गर्मस्थल" हैं। ऐसे क्षेत्रों में यदि ऐसा कहा जाए कि "स्वर्ग को नीच लाना" आसान है। उदाहरण के लिए वेल्स में 1859 में परमेश्वर का भ्रमण हुआ और पुनः एक और जागृति 1904 में आई। फ्लोरिडा क्षेत्र में पेन्साकोला में परमेश्वर का अभिषेक उण्डेला गया, जिसे 1995 का ब्राउन्सविले जागृति के नाम से भी जाना जाता है, और हाल ही में लेकलैण्ड में 2008 में अभिषेक के उण्डेले जाने का काम हुआ।

अतः हम उन क्षेत्रों में आसानी से स्वर्ग खुलने हेतु प्रोत्साहित होते हैं जहां पहले जागृति आ चुकी है, अभिषेक उण्डेला गया है और परमेश्वर का भ्रमण हो चुका है। भारत में शिलाँग में 1906 लोगों ने बड़ी जागृति का अनुभव किया जब वेल्श के मसीही सेवक अपने साथ वहां की जागृति की आग लाए थे। वर्ष 2000 के आरम्भ में शिलाँग में विश्वासियों ने एक और जागृति के लिए परमेश्वर को खोजना आरम्भ किया। उनकी ईमानदारी की प्रार्थनाओं के फलस्वरुप उन्होंने एक बार पुनः 2006 में शिलाँग जागृति के दौरान स्वर्ग को खुला हुआ देखा। पंजाब में सियालकोट ने 1904 में आरम्भ हुई जागृति का अनुभव किया, जहाँ जॉन हाइड नामक एक व्यक्ति की लगातार प्रार्थनाओं के द्वारा उस जागृति का जन्म हुआ। तब तो कोई कारण नहीं है कि ये क्षेत्र पुनः जागृति और प्रभु के भ्रमण का अनुभव न करें।

यह पुस्तक स्वर्ग के खुले होने, इसका अर्थ और इसके परिणाम के विषय में वचन का अध्ययन है। हमें विश्वास है कि बहुत से लोग अपने जीवनों, अपनी स्थानीय कलीसियाओं और अपने समुदायों में "स्वर्ग को

खोलने" के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित होंगे। हम विश्वास करते हैं कि एक विशेष क्षेत्र में स्थानीय कलीसियाऐं एक साथ मिलकर प्रार्थना के प्रयास हेतु प्रेरित होगी कि उनके शहर अथवा क्षेत्र में स्वर्ग खुल सके, कलीसिया का पुनः निर्माण और उस नगर अथवा क्षेत्र में परिवर्तन आ सके।

1

जैसे स्वर्ग में वैसे ही पृथ्वी पर

हमें प्रार्थना करना सिखाते हुए एक महत्वपूर्ण बात प्रभु ने हमारे समक्ष रखी कि हम पृथ्वी पर स्वर्ग को प्राप्त करने का प्रयास करें।

तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसी ही पृथ्वी पर भी हो (मत्ती 6:10)।

वह सब कुछ जो स्वर्ग में है वह पृथ्वी पर भी स्थापित हो और अनुभव किया जाए। हमारा यह कार्य है कि जो स्वर्ग में है वह पृथ्वी पर भी खोला जाए (मत्ती 16:18,19)।

परमेश्वर ने पहले ही अपने लोगों के लिए आत्मिक आशीषें खोल दी है। तौभी ये सारी वस्तुएं हमें आत्मिक क्षेत्र में दी गई है। अभिषेक, चमत्कार, चंगाईयां, हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति आदि, हमें पहले से ही आत्मिक क्षेत्र में दी गई हैं।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है (इफिसियों 1:3)।

तब यह चुनौती है कि ये सारी आत्मिक आशीषें हमारे लिए यहां पर इस पृथ्वी पर प्रकट हों, जैसे वे पहले से ही मसीह में हमें स्वर्गीय स्थानों में दे दी गई हैं। हमारी इच्छा यह होनी चाहिए कि हम उन सब वस्तुओं के साथ पृथ्वी पर चलें जो हमें स्वर्गीय क्षेत्रों में पहले से ही प्रदान की गई हैं।

स्वर्ग के राज्य की ओर बढ़ना

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं (मत्ती 11:12)।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला वह पहला व्यक्ति था जिसने पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य के आने का सन्देश का परिचय कराया (मत्ती 3:2)। उस समय से लेकर जब पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य के आने की घोषणा की गई थी, तब से वे लोग जो आत्मा में बलवान हैं- वे जो आगे बढ़ते है-वही उन वस्तुओं को ले लेते हैं जो राज्य में हैं। आत्मा में जोर लगाना होगा, आत्मा में बलपूर्वक प्रयास करना होगा ताकि हम वह ले सकें जो हमें स्वर्ग के राज्य में पहले से ही दिया जा चुका है।

ऐसा क्यों हैं? क्या यह ऐसा नहीं हैं कि परमेश्वर स्वर्ग का राज्य हमसे दूर रख रहा है? बल्कि परमेश्वर ही है जो यह चाहता है कि पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य प्रकट हो। यह उसे भाया है कि हमें वह राज्य दे (लूका 12:32)। मैं कम से कम दो कारण देखता हूं कि आत्मिक द्वन्द्व क्यों आवश्यक है। पहला, हम जानते हैं कि एक शत्रु है, शैतान वह यह प्रयास करता है ि हम वह प्राप्त न करें जो हमें दिया गया है। वह पृथ्वी पर स्वर्ग नहीं चाहता है अत: वह हर सम्भव प्रयास करके हमारे मार्ग में रुकावट डालेगा। दूसरा एक ऐसे स्थान पर आना जहां आत्मा में बलपूर्वक प्रयास करने से हम उन बातों में चलने के लिए तैयार होते हैं जिन्हें हम प्राप्त करते है। हमें प्राप्त करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

दूसरी ओर, स्वर्ग से उण्डेले जाने (अथवा जागृति अथवा परमेश्वर के भ्रमण) के समय में हम कुछ ऐसा अनुभव करते हैं जिसे हम "खुला हुआ स्वर्ग" कहते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम ऐसे काल में हैं जब स्वर्ग पृथ्वी पर आक्रमण करता है-जब राज्य की वस्तुएं प्राप्त करना बहुत सरल हो जाता है, बल्कि वह हम पर उण्डेली जाती है। स्वर्ग खुल जाते हैं और इसलिए यह बहुत सरल हो जाता है कि जो कुछ स्वर्ग में हमारा है हम उसे ले लें और इस पृथ्वी के क्षेत्र में उसे लेकर चलें फिरें।

हम "उण्डेले जाने", "परमश्वेर का भ्रमण" और "जागृति" शब्दों का प्रयोग परमेश्वर के उसी काम को समझाने के लिए बार बार करेंगे। इसे स्पष्ट करने हेतु "उण्डेले जाने" का काल वह होता है जब स्वर्ग खुल जाता है और परमेश्वर की उपस्थिति लोगों के ऊपर वर्षा की तरह होने लगती है। भ्रमण का काल वह होता है जब परमेश्वर हमारे बीच में चलता फिरता है और तब महान चिन्ह, चमत्कार, अलौकिक सामना होता है और हमारे जीवनों को बदल देता है। 'जागृति' का अर्थ है तरोताजा करना अथवा नए रुप से विकसित करना पुनः जीवित होना अथवा पुनः जीवन प्राप्त करना। जो सूख गया था वह अब तरोताजा होना लगा है और अग्नि पुनः जलने लगी है अतः "जागृति" पुनः तरोताजा होना, पुनः आरम्भ करना और उसे पुनः जलाना जो पहले से स्थापित किया गया, अथवा एक विश्वासी और कलीसिया में अनुभव किया गया था।

2

खुला हुआ स्वर्ग क्या है?

खुला हुआ स्वर्ग एक उण्डेले जाने का काल, अलौकिक भ्रमण का काल और परमेश्वर के लोगों के बीच में जागृति का समय होता है। ऐसे समय में परमेश्वर के लोग आत्मिक और भौतिक आशीषें को स्वर्ग में उण्डेले जाने का अनुभव करना आरम्भ करते है। यह उस समुदाय अथवा क्षेत्र में फैलने लगता है जहां बिना उद्धार पाए हुए लोग भी प्रभावित होते हैं।

खुले हुए स्वर्ग का अर्थ है स्वर्गीय प्रबन्धा

यहोवा तेरे लिये अपने आकाश रूपी उत्तम भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा; और तू बहुतेरी जातियों को उधाार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधाार लेना न पड़ेगा (व्यवस्थाविवरण 28:12)।

तौभी उसने आकाश को आज्ञा दी, और स्वर्ग के द्वारों को खोला; और उनके लिये खाने को मन्ना बरसाया और उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया। मनुष्यों को स्वर्गदूतों की रोटी मिली; उसने उनको मनमाना भोजन दिया (भजनसंहिता **78:23-25**)।

"सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशभ्श की वर्षा करता हूँ कि नहीं" (मलाकी 3:10)।

ये वचन स्वर्ग में द्वारों और खिड़कियों को परमेश्वर के लोगों के जीवनों में खोलने के विषय में बताते हैं ताकि उनके जीवनों में स्वर्गीय प्रबन्धों को ला सके। लोगों की आवश्यकताएं अलौकिक रूप से पूरी होने लगती हैं। नौकरियां, प्रोन्ततियां, आर्थिक बदलाव, व्यापार में उन्नति, ऋण

निरस्तीकारण, जो कुछ खो गया था वह वापस पाना, जो कुछ गलती से छीन लिया गया था वह वापस मिल जाना, और भी अन्य बातें इस सम्बन्ध में होने लगती है जिनेस परमेश्वर के लोगों के जीवनों में भौतिक आशीषें आती हैं। ऐसा हम नहीं कहते कि ऐसी बातें अन्य समयों पर नहीं होती है। परमेश्वर अपने वचन के प्रति सच्चा है और सदैव हमारी आवश्यकताऐं पूरी करता है (फिलिप्पियों 4:19)। और हाँ, हम सदैव विश्वास में चलते हैं कि अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर प्राप्त करके अपनी आवश्यकताओं को पूरा करें (मरकुस 11:24)। तौभी खुले हुए स्वर्ग के समय में औलिक आशीषों को परमेश्वर के लोग बहुतायत से महसूस करते हैं कि यह कुछ भिन्न काम है।

खुले हुए स्वर्ग का अर्थ है परमेश्वर के आत्मा का उण्डेला जाना

और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा (मत्ती 3:16)।

"स्वर्ग खुल गया" वाक्य परमेश्वर के आत्मा के उण्डेले जाने के लिए प्रयुक्त हुआ है। यीशु का अभिषेक आत्मा के द्वारा किया गया और उसकेस पास आत्मा की भरपूरी थी (लूका 4:17, प्रेरितों के काम 10:38, यूहन्ना 3:34)। इसके परिणाम थे, महान आश्चर्यकर्म, चिन्ह, चमत्कार जिन्हें यीशु ने किया, कहीं भी गया वह सदैव खुले स्वर्ग के नीचे चलता रहा। स्वर्ग उसके लिए सदा खुला रहा। यह अलौकिक भ्रमण था। परमेश्वर ने अपने लोगों को भ्रमण किया था (लूका 1:68, 7:16)।

प्रेरितों के काम के पहले आठ अध्याय यरूशलेम के ऊपर खुले हुए स्वर्ग की महान चर्चा करते है जब यीशु की सेवा के तुरन्त बाद का समय आरम्भ हुआ। यह परमेश्वर के आत्मा के उण्डेले जाने का महान् समय था (प्रेरितों के काम 2:17,18)। इसके परिणामस्वरुप बहुतों ने चिन्ह चमत्कार और आश्चर्यकर्म देखे और प्रभु की ओर फिरे (प्रेरितों के काम 2: 43,47)।

खुले हुए स्वर्ग का अर्थ परमेश्वर की धार्मिकता और उपस्थिति का उण्डेला जाना

हे आकाश, ऊपर से धर्म बरसा, आकाशमण्डल से धर्म की वर्षा हो; पृथ्वी खुले कि उद्धार उत्पन्न हो; और धर्म भी उसके संग उगाए; मैं यहोवा ही ने उसे उत्पन्न किया है (यशायाह 45:8)।

चलो, हम यहोवा की ओर फिरें; क्योंकि उसी ने फाड़ा, और वही चंगा भी करेगा; उसी ने मारा, और वही हमारे घावों पर पट्टी बाँधेगा। दो दिन के बाद वह हम को जिलाएगा; और तीसरे दिन वह हमको उठाकर खड़ा करेगा; तबक हम उसके सम्मुख जीवित रहेंगे। आओ, हम ज्ञान ढूँढ़ें, वरन् यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यत्न भी करें; क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चित है; वह वर्षा के समान हमारे ऊपर आएगा, वरन् बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिस से भूमि सिंचती है" (होशे 6:1-3)।

खुले स्वर्ग के समय में धार्मिकता और परमेश्वर की उपस्थिति की वर्षा होती है, ऐसा मानों कि स्वयं परमेश्वर वर्षा की तरह हमारे पास आता है। परमेश्वर के लोग उसकी उपस्थिति और धार्मिकता से ऐसे परिपूर्ण हो जाते हैं कि परमेश्वर की उपस्थिति, धार्मिकता, पवित्रता, शुद्धता, पवित्रीकरण और शुद्धिकरण का चलन नए स्तर तक पहुँच जाता है। तब व्यक्तिगत जीवनों में पाप के लिए कोई स्थान नहीं होता। वे आदते और व्यवहार जो परमेश्वर को अप्रसन्न थे और जो पहले स्वीकार किए जाते थे, अब वे हटाए और तिरस्कृत किए जाते हैं।

लोगों के हृदय परमेश्वर की उपस्थिति और धार्मिकता की बुलाहट और जो कुछ वह करना चाहता है की ओर बहुत खुले होते हैं। तब परमेश्वर के ज्ञान की खोज, भूख और प्यास होती है।

खुले स्वर्ग का अर्थ है स्वर्गदूतों का बढ़ता हुआ कार्य

फिर उस से कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते और ऊपर जाते देखोगे" (यूहन्ना 1:51)।

याकूब बेर्शेबा से निकलकर हारान की ओर चला। और उसने किसी स्थान में पहुँचकर रात वहीं बिताने का विचार किया, क्योंकि सूर्य अस्त हो गया था; इसलिये उसने उस स्थान के पत्थरों में से एक पत्थर ले अपना तकिया बनाकर रखा, और उसी स्थान में सो गया। तब उसने स्वप्न में क्या देखा, कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुँच है; और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं। और यहोवा उसके ऊपर खड़ा होकर कहता है, "मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहाम का परमेश्वर, और इसहाक का भी पररमेश्वर हूँ; जिस भूमि पर तू लेटा है, उसे मैं तुझ को और तेरे वंश को दूँगा। और तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा, और पश्चिम, पूरब, उत्तर, दक्षिण, चारों ओर फैलता जाएगा: और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएंगे। और सुनद्व मैं तेरे संग रहूँगा, और जहां कहीं तू जाए वहां तेरी रक्षा करूँगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊँगा: मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूं तब तक तुझ को न छोडूंगा। तब याकूब जाग उठा, और भय खाकर उसने कहा, "यह स्थान क्या ही भयानक है! यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन् यह स्वर्ग का फाटक ही होगा।" (उत्पत्ति 28:10-17)।

स्वर्गदूत वे आत्माएं है जो विश्वासियों की सेवा के लिए भेजी जाती है (इब्रानियों 1:14)। खुले हुए स्वर्ग के समय, में स्वर्गदूतों का कार्य बढ़ जाता है। लोग स्वर्गदूतों के अनुभवों को बढ़ता हुआ महसूस करने लगते हैं।

परमेश्वर के लोग होने के नाते स्वर्गदूतों की सेवा हमारे लिए महत्वपूर्ण है, यद्यपि हम इसके विषय में बहुत कम प्रचार सुनते हैं। जंगल में प्रभु यीशु की परीक्षा के तुरन्त बाद स्वर्गदूत उसकी सेवा करने लगे (मत्ती 4:11)। गतसमनी के बाग में उसकी गहन वेदना के दौरान स्वर्गदूत ने यीशु को सामर्थ दी (लूका 22:43)। यदि यीशु की सेवा इस प्रकार हो सकती है तो आपको और मुझको स्वर्गदूतों की सेवा से कितना अधिक लाभ उठाना चाहिए।

स्वर्गदूतों ने प्रेरितों की भी सेवा की थी। एक स्वर्गदूत प्रेरितों को जेल में से बाहर लाया (प्रेरितों के काम 5:19)। एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस को निर्देश दिया कि वह गाजा में जंगल में जाकर उस खोजे को मसीह के विषय में बताए (प्रेरितों के काम 8:26)। एक स्वर्गदूत पतरस को जेल में से बाहर लाया (प्रेरितों के काम 12:7-11)। हम देखते हैं कि स्वर्गदूतों ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में बहुत से अन्य काम किए। एक स्वर्गदूत कुरनेलियुस के पास आया और उससे कहा कि पतरस को बुलावा ले (प्रेरितों के काम 10:3,7,22)। इसका परिणाम यह हुआ कि अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाया गया-आरम्भिक कलीसिया में बड़ा बदलाव आया। एक स्वर्गदूत ने हेरोदेस को मारा जो मर गया (प्रेरितोां के काम 12:21-23)। एक स्वर्गदूत पौलुस के सामने प्रकट हुआ और जहाज के टूटने से पहले तूफानों के बीच उसकी और उसके साथियों की सुरक्षा के विषय में उसे आश्वस्त कराया (प्रेरितों के काम 27:23)। अन्य बहुत से तरीके हैं जिनमें स्वर्गदूत हमारी सेवा कर सकते है। स्वर्गदूत हमारी सुरक्षा करते है (भजनसंहिता 91:11)। स्वप्न में हमसे बातें करते है (मत्ती 1:20) हमारे जीवन में अलौकिक प्रबन्ध और स्वर्गीय चंगाई लाते हैं (यूहन्ना 5:4), भौतिक परिस्थितियों को बदल देते है (लूका 1:18-20), हमारे शुद्धिकरण में हमारी सहायता करते है (यशायाह 6:6,7) और भी बहुत करते हैं।

खुले हुए स्वर्ग का अर्थ है परमेश्वर के साथ बढ़ते हुए दर्शन, प्रकाशन और भेंट

तीसवें वर्ष के चौथे महीने के पाँचवे दिन, मैं बन्दियों के बीच कबार नदी के तट पर था, तब स्वर्ग खुल गया, और मैंने परमेश्वर के दर्शन पाए (यहेजकेल 1:1)।

परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखकर कहा, "देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ" (प्रेरितों के काम 7:55-56)।

दूसरे दिन जब वे चलते चलते नगर के पास पहुँचे, तो दोपहर के निकट पतरस छत पर प्रार्थना करने चढ़ा। उसे भूख लगी और कुछ खाना चाहता था, परन्तु जब वे तैयारी कर रहे थे तो वह बेसुध हो गया; और उसने देखा कि आकाश खुल गया; और एक पात्र बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकता हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है। जिस में पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे। उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, "हे पतरस उठ, मार और खा।" परन्तु पतरस ने कहा,"नहीं प्रभु कदापि नहीं; क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।" फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया, "जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।" तीन बार ऐसा ही हुआ; तब तुरन्त वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया। तब पतरस अपने मन में दुविधा में था, कि यह दर्शन जो मैंने देखा वह क्या हो सकता है, तो देखो, वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर का पता लगाकर द्वार पर आ खड़े हुए (प्रेरितों के काम 10:9-17)।

इन बातों के बाद जो मैंने दृष्टि की तो क्या देखता हूं कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है, और जिसको मैंने पहले तुरही के से शब्द से अपने साथ बातें करते सुना था, वही कहता है, "यहां ऊपर आ जा; और मैं वे बातें तुझे दिखाऊँगा, जिनका इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है (प्रकाशितवाक्य 4:1,2)।

फिर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और देखता हूं कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और युद्ध करता है (प्रकाशितवाक्य 19:11)।

विभिन्न स्थानों पर वचन हमें बताता है कि जब स्वर्ग खुल गया तो पृथ्वी पर लोगों ने दर्शन, प्रकाशन और परमेश्वर के साथ भेंटों का अनुभव किया। पौलुस ने बताया कि उसे तीसरे आसमान में उठा लिया गया और जो उसने देखा उसे बताने के लिए मना किया गया (2 कुरिन्थियों 12:1-4)। स्वर्ग से उण्डेले जाने और परमेश्वर के भ्रमण के समय में जब लोग एक खुले हुए स्वर्ग के नीचे होते है, तब परमेश्वर के लोगों के बीच में बढ़ते हुए दर्शन, स्वप्न और प्रकाशन होते हैं। यहां तक कि जिन्हें पहले कभी दर्शन और प्रकाशन नहीं मिलते थे उन्हें भी

ऐससे अनुभव होने लगे। बहुतों के लिए यह आसान हो गया कि वे ज्ञान के वचनों और आत्माओं की परख के अनुभवों में बहने लगे। कुछ प्रकाशन जीवन को बदलने वाले, नियति में सुधार तथा नई सेवाओं को आरम्भ करने आदि के हो सकते है।

खुले हुए स्वर्ग का अर्थ प्रार्थनओं का उत्तर आना

इस प्रकार यरूशलेम में बड़ा आनन्द हुआ, क्योंकि दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के दिनों से ऐसी बात यरूशलेम में न हुई थी। अन्त में लेवीय याजकों ने खड़े होकर प्रजा को आशीर्वाद दिया और उनकी सुनी गई, और उनकी सुनी गई, और उनकी प्रार्थना उसके पवित्र धाम तक अर्थात् स्वर्ग तक पहुँची (2 इतिहास 30:26, 27)।

हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थना को सुनकर सदैव उत्तर देता है। तौभी खुले स्वर्ग के दौरान, जैसा इस्राएल के राजा हिजकिय्याह के जागृति के दिनों में अनुभव किया गया, प्रार्थनाओं के उत्तर आसानी और शीघ्रता से प्राप्त किये जाते है। यह दानिय्येल की प्रार्थना के विपरीत है–जब उसे 21 दिनों तक गहन प्रार्थना और प्रतीक्षा में रहना पड़ा ताकि वह स्वर्ग से उत्तर प्राप्त करे (दानिय्येल 10:1–13)। दुष्टात्माओं की रुकावटें कम होती है और स्वर्गदूतों के द्वारा सन्देश जल्दी और बड़े–बड़े उत्तरों के साथ आते है।

3

किस प्रकार स्वर्ग खुलता है?

क्या कुछ ऐसा है जिसे हम अपने नगर, समाज अथवा स्थान के ऊपर स्वर्ग खोलने के लिए कर सकते हैं? यदि ऐसया है, तो वे कौन-सी बातें हैं जिन्हें हम कर सकते है?

यद्यपि यह सत्य है कि कभी-कभी स्वयं परमेश्वर अपनी प्रभुसत्ता में स्वर्ग को फाड़ कर नीचे उतर आता है, जब कोई ऐसी आशा नहीं करता है, तौभी वचन और इतिहास हमें सिखाता है कि परमेश्वर के लोग स्वर्ग को खुला देखने के लिए कई बातें कर सकते है।

गहनता से परमेश्वर को खोज करना

चलो, हम यहोवा की ओर फिरें; क्योंकि उसी ने फाड़ा, और वही चंगा भी करेगा; उसी ने मारा, और वही हमारे घावों पर पट्टी बाँधेगा। दो दिन के बाद वह हम को जिलाएगा; और तीसरे दिन वह हमको उठाकर खड़ा करेगा; तबक हम उसके सम्मुख जीवित रहेंगे। आओ, हम ज्ञान ढूँढ़ें, वरन् यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यत्न भी करें; क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चित है; वह वर्षा के समान हमारे ऊपर आएगा, वरन् बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिस से भूमि सिंचती है" (होशे 6:1-3)।

यदि परमेश्वर के लोग परमेश्वर के पास वापस आए और प्रभु को खोजे तो वचन हमें निश्चय दिलाता है कि वह हमारे ऊपर वर्षा की नाई आएगा। परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ हमारे ऊपर उण्डेली जाएगी।

हमारी ईमानदारी से की गई परमेश्वर की खोज हमारी परमेश्वर के प्रति गहरी भूख, पश्चाताप्, पवित्रीकरण, उसकी अधीनता और उसके ढूँढ़ने में अधिक समय लगाने के द्वारा प्रकट होती है। हमारे हृदयों में परमेश्वर की खोज के लिए अधिक भूख होनी चाहिए जैसे हिरनी जल

के लिए प्यासी होती है (भजनसंहिता 42:1,2)। इतिहास में उन लोगों की सामर्थी गवाहियां पाई जाती है जिन्होंने परमेश्वर को प्रार्थना, आराधना और स्तुति के साथ तथा प्रभु की उपस्थिति में उसकी गहन खोज की और उन्होंने प्रभु का महान भ्रमण का अनुभव किया। इसलिए कोई कारण नहीं कि एक कलीसिया एक विशेष क्षेत्र में ऐसा नहीं कर सकती कि प्रभु के भ्रमण का अनुभव करें।

अन्ततः यह हमारा चुनाव है कि हम परमेश्वर और उसकी उपस्थिति को खोजें। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि जब हम उसे खोजेंगे, वह हमारे निकट आएगा। जब हम उसके निकट आएंगे वह भी हमारे निकट आएगा।

चार्ल्स फिन्नी ने कहा, "जागृति स्वर्ग से तब आती है जब योद्धा आत्माऐं संघर्ष में यह निश्चय करके शामिल होती है कि जीतेंगे या मरेंगे-अथवा यदि आवश्यकता पड़ी, तो जीतेंगे और मरेंगे। "स्वर्ग के राज्य पर जोर होता आया है और बलवान बलपूर्वक उसे ले लेते है।"

परमेश्वर के लोगों के मधय एकता

देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें! यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया (भजनसंहिता 133:1-3)।

स्वर्ग से उण्डेले जाने के लिए एक आवश्यक बात है कि उस क्षेत्र में परमेश्वर के लोगों के बीच में सच्ची एकता हो। हमें स्वार्थी विचार सन्देह और प्रतिस्पर्धा को दूर करना है। स्थार्यरता से सन्देह, सन्देह से प्रतिस्पर्धा और प्रतिस्पर्धा से बँटवारा आरम्भ होता है।

जब परमेश्वर के लोग एकता में आते हैं- तब चाहे वे किसी भी समुदाय, सैद्धान्तिक मान्यताओं, छोटी-छोटी बातों को दूर करके केवल परमेश्वर की खोज के उद्देश्य से एक साथ आते है- तब वहां परमेश्वर

के आत्मा और उसकी सामर्थ का महान उण्डेला जाना होगा। तब वहां अभिषेक, ताजगी, आशीष और जीवन का उण्डेला जाना उन सब पर सिर से लेकर पैर तक, बड़ों से लेकर छोटों तक होगा।

यही बात 120 चेलों के बारे में कितनी सत्य थी। ऊपर से उण्डेले जाने की प्रतिज्ञा के बाद (प्रेरितों के काम 1:5,8), बाइबल हमें बताती है कि "वे लगातार प्रार्थना निवेदन में लगातार बने रहें" (प्रेरितों के काम 1:14)। जैसे वे एकता और लगातार प्रार्थना में बने रहे-वे पवित्रात्मा के उण्डेले जाने को प्राप्त कर सके!

क्या आप परमेश्वर से मांगेगे कि आप के नगर में ऐसे लोग हो-पास्टर, प्रचारक, परमेश्वर के सेवक और विश्वासी-जो अपने-अपने स्वार्थों को दूर करके एक साथ आकर परमेश्वर को खोजेंगे कि एक खुला स्वर्ग एक भ्रमण, उण्डेला जाना एक जागृति आए जो हमारे नगर को प्रत्येक कलीसिया को प्रभाविक करे। ऐसे राज्य की सोच रखनेवाले मसीह के समान लोगों को प्रेम करनेवाले अगुवे कहां हैं? ऐसे विश्वासी कहां है जो अपनी सामुदायिक कवच से बाहर आएगे एक कलीसिया के प्रति बंटवारे की सोच हटाने वाले और राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के प्रति और उसके राज्य और उसकी कलीसिया के प्रति विश्वासयोग्यता को चाहने वाले लोग है? क्या हम अपने नगर के ऊपर स्वर्ग खोलने के लिए एक साथ मिलकर परमेश्वर को खोजेंगे?

लगातार प्रार्थना

इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ: धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। एलिय्याह भी तो हमारे समान दु:ख-सुख भोगी मनुष्य था; और उसने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की कि मेंह न बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर मेंह नहीं बरसा। फिर उसने प्रार्थना की, तो आकाश से वर्षा हुई, और भूमि फलवन्त हुई (याकूब 5:16-18)।

परमश्वेर अपने लोगों की लगातार प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। यह जीवित उदाहरण एलिय्याह का है जब उसने लगातार स्वाभाविक वर्षा के

लिए प्रार्थना की तो उसने ऐसा होते देखा (1 राजा 18:41-46)। उसने घोषणा की कि बहुत तेज वर्षा की आवाज है और वह प्रार्थना करने लगा। हमें नहीं मालूम कि उसने कितना समय प्रार्थना में व्यतीत किया। उसने छः बार बाहर आकर अपनी प्रार्थना के उत्तर में चिन्ह देखे और कोई चिन्ह नहीं था। तौभी उसने प्रार्थना करना नहीं छोड़ा। वह सातवीं बार तक प्रार्थना करता रहा जब तक कि उसने एक छोटा सा चिन्ह नहीं देख लिया कि वर्षा रास्ते में है। और निश्चय ही वर्षा आ गई। हमें स्वर्ग खोलने के लिए इसी प्रकार की प्रार्थना की आवश्यकता है। प्रार्थनाा वह है जो उस समय भी नहीं छूटती जब स्वर्ग खुलने का कोई चिन्ह न भी दिखे। लगातार प्रार्थना। ईमानदारी की प्रार्थना। धैर्य के साथ प्रार्थना। प्रार्थना तब तक नहीं छूटेगी जब तक कि वर्षा न हो जाए।

यहाँ और भी अधिक वचन लिखे हैं जो हमें स्वर्ग को खोलने के लिए प्रोत्साहित करते है:

यदि मैं आकाश को ऐसा बन्द करूँ, कि वर्षा न हो, या टिड्डियों को देश उजाड़ने की आज्ञा दूं, या अपनी प्रजा में मरी फैलाऊँ, तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूँगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा (2 इतिहास 7:13,14)।

हे सेनाओं के परमेश्वर, फिर आ! स्वर्ग से ध्यान देकर देख, और इस दाखलता की सुधि ले, यह पौधा तू ने अपने दाहिनने हाथ से लगाया, और जो लता की शाखा तू ने अपनने लिये दृढ़ की है (भजनसंहिता 80:14,15)

हे यहोवा, अपने स्वर्ग को नीचा करके उतर आ! पहाड़ों को छू, तब उनसे धुआँ उठेगा! (भजनसंहिता 144:5)।

भला हो कि तू आकाश को फाड़कर उतर आए और पहाड़ तेरे सामने काँप उठे। जैसे आग झाड़-झँखाड़ को जला देती या जल को उबालती है, उसी रीति से तू अपने शत्रुओं पर अपना नाम ऐसा प्रगट कर कि जाति जाति के लोग तेरे प्रताप

से काँप उठें! जब तू ने ऐसे भयानक काम किए जो हमारी आशा से भी बढ़कर थे, तब तू उतर आया, पहाड़ तेरे प्रताप से कांप उठे। क्योंकि प्राचीनकाल ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न कान से उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहनेवालों के लिये काम करे (यशायाह 64:1-4)।

बरसात के अन्त में यहोवा से वर्षा माँगो, यहोवा से जो बिजली चमकाता है, और वह उनको वर्षा देगा और हर एक के खेत में हरियाली उपजाएगा (जकर्याह 10:1)।

आशा और विश्वास

जैसे हम परमेश्वर की खोज करते हैं और एक साथ प्रार्थना करते हैं तो ऊँचे स्तर का विश्वास और आशा होनी चाहिए कि हम परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ का प्रकटीकरण देख सकें। हमें एक किसान की तरह होना चाहिए जो अपना बीज उस पूर्ण आशा में बोता कि निश्चय ही वर्षा होगी। हमें परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ की प्रत्येक बूँद और बौछार का आनन्द उठाना चाहिए। जिसे हम देखना आरम्भ करते हैं। उसकी उपस्थिति का प्रत्येक अनुभव, प्रत्येक चंगाई, चाहे कितनी भी छोटी क्यों न हो, हमारे आनन्द के लिए पर्याप्त है कि हम आनन्द मना सकें क्योंकि यह आने वाली भरपूरी की वर्षा का चिन्ह है।

अपने अधिाकार का प्रयोग करें

और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बधेगा और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग मं खुलेगा (मत्ती 16:18,19)।

हमें पृथ्वी पर स्वर्ग खोलने का अधिकार दिया गया है। हम पृथ्वी पर वह बांधते हैं जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग में बाँधने की घोषणा की है। हम पृथ्वी पर उसे खोलते हैं जिसे स्वर्ग में खुलने की अनुमति है। हमें अपना आत्मिक अधिकार प्रयोग करना चाहिए और उस बात को बाँध

ना चाहिए जिससे स्वर्ग हमारे ऊपर उण्डेले जाने से रुका रहता है। दवाब और बँटवारे की आत्माएं, दुष्टात्माओं के प्रभाव हमारे क्षेत्र के ऊपर से हमें परमेश्वर के द्वारा प्रदान किए गए अधिकार को प्रयोग करके हटाना चाहिए।

वह ऋतु क्यों समाप्त हो जाती है?

यद्यपि प्रत्येक जागृति अथवा उण्डेला जाना अपने आप में अद्भभुत है, फिर भी परमेश्वर के चलन को प्राप्त करने और बनाए रखने की कुछ समानताऐं हैं। जब किसी कलीसिया या समूह पर अग्नि आती है तब परमेश्वर अपने लोगों से प्रत्युत्तर की अपेक्षा करता है। जब लोग अपनी स्वार्थपर्ता की योजनाओं और कार्यक्रमों को अलग करके मसीह और उसकी जागृति के कामों को अपने जीवन का केन्द्रबिन्दु मानते हुए लगातार प्रत्युत्तर देते हैं तो स्वर्ग से उण्डेला जाना लगातार चलता रहता है और उसका भ्रमण उसकी उपस्थिति बनी रहती है। हमारी पूर्ण उत्सुकता अग्नि के गिरने के समय हमें उण्डेले जाने को प्रत्युत्तर देने के लिए तैयार करती है कि हम उस उण्डेले जाने के प्रति अपने कलैण्डर को खाली करके अपने जीवनों में उसकी ओर दृष्टि लगाए रहें।

जागृति हमारे जीवन के तरीके, सोचने के तरीके, और कलीसिया में उपस्थिति होने के तरीके को बिल्कुल बदल देगी। बहुत से लोग अपने हृदयों और मस्तिष्कों में इस महान् बदलाव के लिए वास्तव में अभी तक तैयार नहीं हुए है।

उण्डेले जाने का होना और कुछ समय के लिए बने रहने का कारण भी ऐसा ही है। स्थाई रूप से इसका बने न रहने का कारण है कि लोग अथवा अगुवे पुनः अपने जीवन की बातों की चिन्ता में पड़ जाते है। सामान्य बातों का दवाब और इच्छाऐं उनके जीवनों में से परमेश्वर के चलन को चुरा लेती है और यह लगातार जारी नहीं रह सकता है। परमेश्वर की योजना हमारे लिए यह नहीं है कि उसका स्वाद और उपस्थिति हम धुंधली कर दें। अपनी रुचि को मना करते हुए और अपने

जीवनों और कलीसियाओं में परमेश्वर के लगातार चलन को बनाए रखने हेतु अनिच्छुक होने के द्वारा। जागृति नहीं आएगी और न ही आकर बनी रहेगी यदि हमारे पास इससे अच्छा कुछ है जिसे हम कर सकते है। केवल तभी जब हम अपने कलैण्डर को खाली करेंगे अपने जीवनों को खाली करेंगे और एक खाली बर्तन बनेंगे, हम परमेश्वर की ओर से उण्डेले जाने का अनुभव करेंगे। और यदि हम कुछ और करने लगेगे तो परमेश्वर की ओर से उण्डेले जाने में नहीं रहेंगे। यहां तक कि सेवा की अच्छी बातें भी परमेश्वर के आत्मा के उण्डेले जाने और हमारे जीवनों में जागृति लाने को रोक सकती है।

(आई सॉ दिस्मिथन आउटपोरिंग-रौन मैक गाटिन-2002 की पुस्तक से संकलित) आइए उसे तब तक खोजें जब तक वह आकर हम पर, हमारी कलीसिया पर, नगर की कलीसिया पर और नगर पर वर्षा न करे।

क्या हम उसे और उसकी अधिक उपस्थिति का अनुभव करने के लिए कीमत चुकाएंगे?

4

क्या आपके क्षेत्र में स्वर्ग खुला है

हम अपने नगरों और क्षेत्रों को जो लोगों से भरे है कैसे प्रभावित करने जा रहे है? केवल एक अकेली कलीसिया यह नहीं कर सकती है। हमारे जैसे लाखों लोगों से भरे शहर को एक प्रचारक, एक सुसमाचार का कार्यक्रम प्रभावित नहीं कर सकता है। हमें सम्पूर्ण जागृति, परमेश्वर की सामर्थी उपस्थिति और सामर्थ के उण्डेले जाने की आवश्यकता है जो हमारे नगर के प्रत्येक भाग में उस समय तक बनी रहे जब तक कि सम्पूर्ण नगर स्थाई रुप से प्रभावित न हो जाए। हमारे नगर के परिवर्तन के लिए जागृति बहुत आवश्यक है।

जागृति का एक बुनियादी उद्देश्य खोए हुओं का उद्धार और समुदायों और नगरों का बदलाव है। जागृति खुले हुए स्वर्ग का वह समय होता है जहां परमेश्वर का राज्य शाक्तिशाली रुप में खुलता है और बहुत बड़ी भीड़ की चंगाई, छुटकारा और उद्धार होता है। परमेश्वर जागृति देता है ताकि हम अपने चमत्कारों को प्राप्त रकें, महिमा से भर जाएं, अपने समुदायों में ले जाएं और अपनी कलीसिया को पुनः सुधार करके अपने शहरों को बदल सकें।

यह हमारी पुकार है कि हम एक साथ मिलकर आएं और अपने शहर के ऊपर स्वर्ग को खोलने का सृजन करें। क्या आप स्वर्ग के खोले जाने के लिए परमेश्वर को खोजने का अपना काम पूरा करेंगे? बड़ी आग जलाने के लिए केवल एक ही चिगारी की आवश्यकता होती है। परमेश्वर को केवल मुठ्टीभर लोगों की आवश्यकता होती है (याद रखें उपरौठी कोठरी में केवल 120 लोग थे), कि वह आग लगा दे जो पूरे शहर को उलटा-पुलटा कर दे।

वह स्वर्ग को नीचे झुकाकर उतर आया; और उसके पाँवों तले घोर अन्धकार था (भजनसंहिता 18:9)।

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्धनों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ॲण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

नोट्स

नोट्स

मसीह की देह लोगों के ऊपर, समुदायों और भौगोलिक क्षेत्रों के ऊपर खुले हुए स्वर्ग की नई समझ और गहन विचार प्राप्त कर रही है। ऐसा लगता है कि संसार में कुछ क्षेत्र ऐसे है जो खुले हुए स्वर्ग के लिए "प्रसिद्ध" है जैसे वेल्स और फ्लोरिडा और भारत में शिलाँग।

यह प्रकाशन एक साधारण अध्ययन है कि वचन खुले हुए स्वर्ग के बारे में क्या प्रकट करता है इसका क्या अर्थ है और इसका परिणाम क्या होगा। हम विश्वास करते हैं कि बहुतों को प्रार्थना करने और अपने जीवनों, अपनी स्थानीय कलीसिया और अपने समुदाय पर स्वर्ग खोलने के लिए उत्साह मिलेगा। हम विश्वास करते हैं कि स्थानीय कलीसियाओं को एक क्षेत्र में एक साथ प्रार्थना करने और प्रयास करने के लिए प्रेरणा मिलेगी कि वे अपने क्षेत्र अथवा नगर पर स्वर्ग खोल सकें, कलीसियाओं का सुधार और परिवर्तन कर सकें।

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org